हमारे प्रभु यीशु के नाम की स्तुति हो।

परमेश्वर अक्सर हमसे हमारे हृदय में बात करता है, परन्तु हम कई बार उसकी आवाज़ को अनदेखा कर देते हैं। और परिणामस्वरूप हम अनावश्यक कठिनाइयों और परेशानियों में फँस जाते हैं।

परमेश्वर की आवाज़ की अनदेखी के परिणाम बहुत गंभीर होते हैं। आइए, उच्छृंखल पुत्र की कहानी से सीखें, जिसने अपने पिता से अपनी सम्पत्ति का भाग माँग लिया।

लूका 15:11–13

“उसने कहा, किसी मनुष्य के दो पुत्र थे। उन में से छोटे ने अपने पिता से कहा; हे पिता, जो भाग मुझ पर आ पड़ता है, वह मुझे दे। तब उसने अपनी संपत्ति का बाँटकर उन को दे दिया। और कुछ दिन बाद वह छोटा पुत्र सब कुछ बटोरकर दूर देश को चला गया, और वहाँ उच्छृंखल जीवन व्यतीत करके अपनी संपत्ति उड़ा दी।”

उस पुत्र ने भीतर की आवाज़, बुद्धि और चेतावनी को अनसुना कर दिया और भोग विलास के मार्ग पर चला गया। आगे लिखा है:

लूका 15:14–16

“जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस देश में बड़ी अकाल पड़ा, और वह घटी में पड़ गया। तब वह जाकर उस देश के एक नागरिक से चिपक गया; और उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने भेजा। और वह यह चाहने लगा कि जो फलियाँ सूअर खाते थे, उन्हीं से अपना पेट भरे, पर किसी ने भी उसे कुछ न दिया।”

परन्तु फिर मोड़ आया:

लूका 15:17–18

“जब उसे होश आया तो उसने कहा, मेरे पिता के कितने ही
मज़दूरों को अन्न की बहुतायत मिलती है और मैं यहाँ भूखों मरता हूँ! मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा, और उससे
कहूँगा; हे पिता, मैं ने स्वर्ग के विरुद्ध और तेरे साम्हने पाप किया है।”

यह वाक्य “जब उसे होश आया” (या “जब उसने अपने हृदय में विचार किया”) इस बात को प्रकट करता है कि परमेश्वर की आवाज़ पहले से ही उसके हृदय में बोल रही थी। उसकी अंतरात्मा उसे चेतावनी दे रही थी कि यह मार्ग गलत है, परन्तु उसने उस आवाज़ पर ध्यान नहीं दिया—जब तक कि एक दिन उसने सुनने और मानने का निश्चय नहीं किया।

आज भी परमेश्वर इसी प्रकार हमसे बात करता है। उसका पवित्र आत्मा हमारी आत्मा और विवेक को गवाही देता है: “उस मार्ग पर मत चलो। उस पाप में मत बने रहो। लौट आओ।” परन्तु हममें से कई लोग अपने हृदय को कठोर बना लेते हैं।

बाइबल कहती है:

नीतिवचन 23:26

“हे मेरे पुत्र, तू अपना मन मुझे दे; और तेरी आँखें मेरी मार्गों पर प्रसन्न रहें।”

प्रभु हमारे केवल बाहरी काम नहीं, वरन् हमारा सम्पूर्ण हृदय चाहता है। जब हम उसकी आवाज़ की अनदेखी करते हैं, तो हम विनाश की

ओर बढ़ते हैं। परन्तु जब हम लौटकर उसके पास आते हैं, तो वह हमें क्षमा करता है और पुनःस्थापित करता है—जैसे उच्छृंखल पुत्र के साथ हुआ।

उदाहरण पर ध्यान दें:

योना ने परमेश्वर की आवाज़ की अनसुनी की और भाग गया, परन्तु तूफ़ान और बड़ी मछली के पेट में जाना पड़ा (योना 1:3–17)।

इस्राएल ने भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनी, और न्याय उन पर आ पड़ा (2 इतिहास 36:15–16)।

परन्तु परमेश्वर दयालु है। यदि आज तुम उसकी आवाज़ सुनो और ध्यान दो, तो वह तुम्हें खुले बाँहों से अपने पास स्वीकार करेगा।

इब्रानियों 3:15

“आज यदि तुम उसका शब्द सुनो, तो अपने मनों को कठोर न करना,

जैसा कि विद्रोह के समय हुआ था।”

इसलिए उस आवाज़ को मानो जो तुम्हें प्रार्थना करने को कहती है, जो तुम्हें उपवास करने को प्रेरित करती है, जो तुम्हें वचन पढ़ने के लिए कहती है, जो तुम्हें क्षमा करने और परमेश्वर की सेवा करने को प्रेरित करती है। यहाँ तक कि यदि वह आवाज़ कहती है कि उस स्थान या स्थिति को छोड़ दो, तो उसे अनसुना मत करो।

उस आवाज़ की अवज्ञा करना दुख और विपत्ति लाता है, परन्तु उसका पालन करना जीवन और आशीष लाता है।

प्रभु हमारी सहायता करे कि हम हमेशा अपने हृदय में उसकी आवाज़ पर ध्यान दें।

यदि आप अपने जीवन में यीशु मसीह को ग्रहण करना चाहते हैं, तो आज ही अपने हृदय को उसके लिए खोल दीजिए।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp